Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

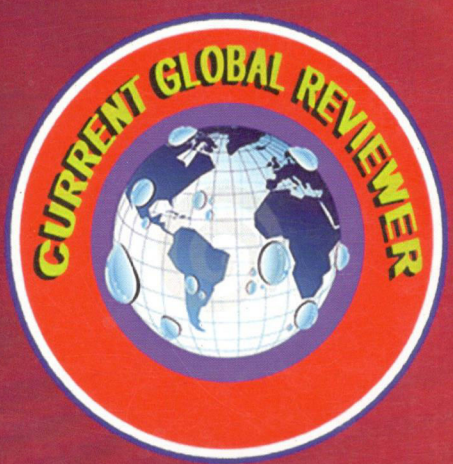

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.publishjournal.co.in

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XIX (19) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
June 2019 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

June2019Issue- 19 Vol. I

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Shaurya Publication , Latur

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XIX (19) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
June 2019 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

Index

1. Digital Banking :An Overview 5
Dr Madhukar P Aghav
2. Financial Markets : Evaluating Averages and Indicators 13
Dr Sachin Nagnath Hadoltikar
Memon Sohel Mohd Yusuf
3. Human Resource Management (Hrm) :An Overview 19
Dr. Kathar Ganesh. N.
4. Impact of Mergers & Acquisition on Private Sector Banks 26
In Global Economy
Dr. Nanaji Krishna Aher
5. Dramatic Stress: The Spirit of Play 32
Sheema Farheen
Dr Farhat Durrani
6. Recent Trend InBanking 41
Swapnil .Kalyan. Laghane, Dr Quazi Baseer Ahmed
7. Corporate Governance in Maharashtra Companies 49
Dr. Rajesh Bhausaheb Lahane
8. Effective Digital Marketing Strategies & Approaches 59
Dr Vikrant Uttamrao Panchal
9. Global Competitiveness of Indian Industries Strategy and 70
Innovation
Dr. Rajendra Ashokrao Udhan
10. Indian logistics Trade in Dynamic World Scenario 79
Adnan Ali Zaidi, Dr Memon Ubed
11. Isolation of Cyanobacterial strains utilizing crude oil from sea water 95
Dr.K.G.Maske
12. **The Role of Irrigation Technology in Agricultural Development in satara District : A Geographical Study** **98**
Dr. B.R.Shinde
13. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि बौद्ध धम्म् 103
डॉ. आर. एस. पारवे
14. **लातूर जिल्ह्यातील आत्मकथने** 108
डॉ. दुष्यंत कटारे
16 नई बिसात : उपन्यास में दलित चित्रांकण 111
डॉ. बालाजी कोनाळे
१७ अश्क के नाटकों में नारी चरित्रों के विभिन्न रूप 114
डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XIX (19) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
June 2019 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

अश्क के नाटकों में नारी चरित्रों के विभिन्न रूप

डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी
पदव्यूत्तर हिंदी विभाग, दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

''जीवन को यथार्थ से जोडनेवाले नाटककार अश्क का दृष्टकोण नारी के प्रति अत्याधिक संवेदनशील है। नारी के प्रति उनके मन में असीम श्रध्दा, स्नेह और गहरी वेदना है। उनके नाटकों में नारी के भिन्न–भिन्न रूप हमें देखने को मिलते है। उन्होंने विवाह और प्रेम की समस्या को लेकर चलनेवाले इसी पृष्ठभूमि पर विविध संस्कारों वाली नारियों के चित्र रेखांकित किए है। सामंती संस्कारों से लेकर वर्तमान सजग दृष्टिकोण रखनेवाले तरह–तरह के नारी पात्र उनके नाटकों में विखरे पडे हैं।''[१] भिन्न भिन्न नारियों के चरित्रों का चित्रण लेखक स्पष्ट इस उद्देश्य से करते है कि आज की नारी अपने आप को पहचान कर, अपने पूर्ववर्ती नारियों से अपनी स्थिति की तुलना करते हुए, स्वतंत्र देश में अपने महत्व को पहचाने। नारी चरित्र का चित्रण अश्कजी पुरी तन्मयता के साथ करते है। सुरेन्द्रपाल के शब्दों में, ''स्त्री चरित्र पुरूष के लिए सदा एक चुनौति रहा है और किसी भी चुनौती को स्वीकार करने से कतराना 'अश्क' ने नहीं सीखा। संभवत: इसी लिए उनकी कृतियों में सभी चरित्र की सूक्ष्मताओं का ऐसा सफल चित्रण उपलब्ध है।''[२] उन्होंने नारीके विविध रूपों का चित्रण करते हुए बाहर के संसार को बनाने की फिक्र में घर उजाडनेवाली तो घर बनाने की चिंता करनेवाली पत्नियों के चरित्र भी अंकित किए है। रामपाल बजाज के शब्दों में उनके नारी चरित्र, ''पुरूष तथा स्त्री पात्रों में सुशिक्षीत और संस्कृत होते हुए भी आधारभूत धारणाओं में नई विशेषता लेकर अवतीर्ण हुए है।''[३] वास्तव में वे नारी को न पुरूष की दासी देखना चाहते है, न खिलौना, न देवी। वे उसे पुरुष के साथ पग से पग और कंधेसे कंधा मिलाकर चलती हुई देखना चाहते है। वे नारी को पुरुष के साथ पग से पग और कंधेसे कंधा मिलकर चलती हुई देखना चाहते है। वे नारी को पुरुष की जीवन संगिनी के रूप में देखना चाहते है। वे उसे अपने कर्मक्षेत्र की सहयोगिनी बनाना चाहते है।

अश्क के नाटकों में चित्रित नारी चरित्रों का अनुशीलन करने से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी नाट्य रचनाओं में पुरुष पात्रों की अपेक्षा नारी पात्रों को अधिक महत्व प्राप्त हुआ है। इसी कारण कुछ समीक्षकों ने उनकी नाट्य रचनाओं को नायिका प्रधान कहा है। यह सच है अश्कजी के नाटकों में केन्द्रिय भूमिका नारी चरित्रों ने ही निभाई है। नारी के प्रति लेखक का दृष्टिकोण सदा ही उदार तथा सहानुभूतिपूर्ण रहा है। अपनी नाट्य रचनाओं में उन्होंने नारी चरित्रों का चित्रांकन बडी लगन और संवेदना से किया है। वे नारी चरित्रों को संपूर्ण सामाजिक परिवेश में चित्रांकित करते है। युगीन स्थितियों में वे नारी की जागरूकता पर विशेष ध्यान देते है। नारी चरित्र को सामाजिक संदर्भ में वे सदा उसे उँचा उठाना चाहते है। उनके नारी न तो विलास का साधन है और न मात्र उपभोग की वस्तु है। वे चाहते है आज की नारी आर्थिक और वैयक्तिक स्तर पर पूर्ण स्वतंत्र हो साथ ही समाज के प्रति अपने दायित्व को भी कभी न भूले। नारी पुरुष की सहचारिनी है। दूसरा कोई रुप उन्हें स्वीकार नहीं। नारी के उस रुप की वे अवहेलना करते है जिसमें वह मात्र बाह्य प्रदर्शन की वस्तु

Issue XIX (19) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
June 2019 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

नारी को अब बंधनों के नामपर दबाकर नही रखा जा सकता। आज की नारी स्वतंत्र रुप से अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहती है और उसे कोई रोक नहीं सकता। मै देवी भी नही जो केवल अपने स्थान पर बैठी रहे। तुम एक दासी, खिलौना या देवी चाहते हो। संगिनी की तुम में से किसी को भी जरुरत नहीं।''[८] माया का यह कथन उस तीनों पुरुषों की मानसिकता को ही रेखांकित करता है जो माया के साथ रहकर भी माया को समझ नहीं सके। माया ने इन पुरुषों के वास्तविक रुप को पुरी तरह से पहचान लिया। इसीलिए वह इन तीनों की दुर्बलताओं को जानकर ही उन्हें अनावृत्त कर देती है। वह इन तीनों के यथार्थ रुप को जानकर उन्हें उनकी दुर्बलताओं का अहसास दिला देती है। इसलिए डॉ. धर्मवीर भारती ने माया के संदर्भ में कहा है कि, माया के रुप में ''जो नारी कैद में निष्क्रिय, असमर्थ और काराबध्द है, वह 'उडान' में सक्रिय, विद्रोहिणी और अपने पथ की खोज में विफल है।''[९] यह कथन ही माया के व्यक्तित्व की उडान को अधोरेखित करता है। 'उडान' की माया का चरित्र उस स्वतंत्र विचारों की नारी का है जो जीवन पथ में संगिनी बनकर समतल भूमिपर चलना चाहतल है। माया के रुप में लेखक ष्मध्यवर्गीय पतनोन्मुख समाज के शिकंजे में जकडी हुई नारी और उसके सहयोग से वंचित अस्वस्थ अभावग्रस्त और विकृत पुरुष के सामने ऐ नारी पगडंडी विछाता है।'' इसमें संदेह नहीं कि अश्क जी उड़ान नाटक में माया के माध्यम से एक ऐसी संघर्षरत विद्रोही नारी का चरित्र अंकित किया है कि उसका साहसी व्यतिवं उनके लिए प्रेरणादायी सिध्द होगा।

संदर्भ :

१) गोपाल कृष्ण कौल : नाटककार अस्क पृ. ९६
२) उपेंद्रनाथ उश्क : भंवर पृ. १०
३) प्रतिनिधि एकांकीकार : सं. रामचरण महल
४) उपेन्द्रनाथ अश्क : स्वर्ग की झलक
५) सं. जगदीशचन्द्र माथुर : नाटककार अश्क

Current Global Reviewer

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Peer Reviwed Journal

ISSN 2319-8648

Edited By
Shaurya Publication
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

Publisher
Shaurya Publication

www.publishjournal.co.in

ISSN 2394-5303

Printing® Area

Issue-*60, Vol-03 December* 2019

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

29) मानवाधिकार संरक्षण एवं भारतीय संविधान
विनोद कुमारी, डॉ. रमेश पारिक ||117

30) माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के सन्दर्भ में ...
पवन कुमार, सरस्वती देवी, सुल्तानपुर ||121

31) पर्यटन विकास और संचार माध्यमों की भूमिका
डॉ. नीता उदाणी, राजकोट ||124

32) भारतीय साहित्य की अवधारणा
डॉ. प्रदीप सुर्यवंशी, लातूर ||128

33) दादू दयाल के काव्य में कृषक जीवन सम्बन्धी रूपक
रश्मि साबू, राजकोट ||130

34) स्वतंत्रता के बाद की ग्रामीण जीवन की समस्याओं का दस्तावेज 'मकतल'
पटेल राजेशकुमार ए., राजकोट ||135

35) उदयपुर क्षेत्र में भील जनजाति में ईसाई मिशन का विश्लेषण
अमनदीप, जयपुर ||138

36) डॉ. दिनेश चमोला की कहानियों में मानवीय संवेदना
ढोल शीतलबहन पी., राजकोट ||141

37) हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास
डॉ. यशवंत एन. हिराणी, राजकोट ||144

38) 'वरुण के बेटे' उपन्यास में चित्रित आँचलिकता
प्रा.डॉ. जानअहेमद के. जे., लातूर ||147

39) महाराष्ट्र प्रदेश के उपक्षितो के लोकरंगमंच की पारंपारिकता एंव समसामायिकता
प्रा. कैलास निवृत्ती पुपुलवाड ||150

40) 'तेरे हिरखै च' कविता–संग्रैह : इक जायजा
राकेश कुमार शर्मा ||151

41) 'हून इ'यां की'? कथ्य ते रंग–शिल्प
प्रज्ञा शर्मा, जम्मू ||153

42) पाणिनीय-व्याकरणे सञ्ज्ञासूत्राणाम् आमुखावलिः
Debabrata Sarder ||159

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

32

भारतीय साहित्य की अवधारणा

डॉ. प्रदीप सुर्यवंशी
पदव्युत्तर हिंदी विभाग,
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

****

साहित्य किसी एक वर्गीय चेतना से जुड़ा नहीं होता बल्कि उसमें सत्य के शोध, शिवम की उपासना एवं सौंदर्य की साधना करने की क्षमता विद्यमान रहती है। साहित्य स्रष्टा में भावयित्री तथा कारयित्री प्रतिभा का भंडार होता है जिसमें साहित्य के सभी प्रयोजन समाहित होते हैं। वह व्यवहार विद होने के साथ-साथ शिवेत्तरक्षतये का आहवान करता है और उसके लोकमंगलकारी व्यवहार के कारण उसका प्रत्येक वाक्य रसात्मकता से भरा होता है, जो हृदय की मुक्तावस्था का परिणाम बनता है।

साहित्य सोद्देश्य कृति है। साहित्य की अनंत परिभाषाओं के बावजूद भी 'सहितस्य' में जो स-हित का भाव और सबको साथ लेकर चलने का भाव भरा है मूल में तो साहित्य का वास्तविक मर्ग ही यही है, लेकिन आज यह उद्देश्य साहित्य से दूर होता जा रहा है।

साहित्य का महत्त्व :

जिस समाज में साहित्य और साहित्यकार आदर नहीं पाता वह समाज सुसंस्कृत और सभ्य नहीं हो सकता है। नेपोलियन ने कहा है- दुनिया में दो ही ताकतें हैं - तलवार और लेखनी। अंत में तलवार हमेशा लेखनी से हारती है।

एमर्सन के मतानुसार- 'विचार ही संसार पर शासन करते हैं।' जबकि अमृता प्रितम का कहना है- 'समय पर वही सवारी कर सकता है, जो समय की लगाम पकड़े रहे।' शेक्सपियर का मानना है कि, 'सुंदर विचार जिसके साथ होते हैं, वे कभी अकेले नहीं होते।'

मानवता सार्वभौम, सार्वकालिक संस्कृति है। साहित्य इसी संकल्प चेतना का आदि तत्व है। आधुनिकता का यह स्वभाव है कि, वह अपने अज्ञान को विद्रोह से दबाती है, जबकि अज्ञान की दवा ही ज्ञान है। साहित्य मूलत: वर्चस्ववाद, तालिबानी संस्कृति और बिनलादेनी मानसिकता का प्रतिरोध करना सिखाता है।

साहित्य की केंद्रीय भूमिका चिंतन और विचार से ही प्रारंभ होती है। विचार का फैलाव त्याग माँगता है जिसके अभाव में विचार एक नारेबाजी बनकर रह जाता है। जनपथ नहीं बन सकता। गांधी के नेतृत्व को देश ने इसीलिए स्वीकारा था क्योंकि समाज के आखिरी आदमी की जो कसौटी उन्होंने भारतीयों के समक्ष रखी उसी पर वे स्वयं पहले चले। वे अपने जीवन को देश के सबसे गरीब आदमी के साथ एकाकार कर देना चाहते थे। मार्क्सवादी विचार के आगे तक न चल पाने का बहुत बड़ा कारण उस विचार के आचरण की कमी ही था।

भाषा काई भी हो, वैश्विक परिदृश्य में मनुष्य संघर्ष और उसकी समस्याएँ कमोबेश एक जैसी है। 'साहित्य' मनुष्यता और संघर्ष के सापेक्षिक संबंधों का पारिभाषिक सूत्र है। जीवट और जिजीविषा के इस सनातन संघर्ष में अंतत: मनुष्य विजयी होता है। बाह्य दुनिया के साथ मनुष्य की अंतर्दुनिया को जानने के लिए साहित्य से बेहतर माध्यम कोई नहीं हो सकता।

भारतीय साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए वे आगे कहते हैं कि- "भारतीय भाषाओं में और भारतीय दर्शन तथा साहित्य की परंपराओं में सत्य की यह जिज्ञासा, यह खोज, यह अभिव्यक्ति भारत के नवनिर्माण और सच्चे न्यायनिष्ठ स्वराज की आधारशिला के रुप में सुप्रतिष्ठित रही है। सत्यनिष्ठा से संप्रेरित संवाद और समन्वय ने साहित्यिक सौंदर्य-बोध के माध्यम से शिवं और हितं का सार्थक संपादन किया है। अतीत को विस्मृति के गर्भ में निर्वासित किए बिना भारतीय साहित्यिक अभिव्यक्ति ने अपने आपको अतीत, वर्तमान और भविष्य के साथ जोड़ा है। जाति की अस्मिता को त्रिकालदर्शी, सनातन एवं परिवर्तनशील आयाम एवं परिभाषाएँ दी हैं, गति और दिशा दी है। प्रत्येक युग में व्यक्ति और समाज के सच में तथा व्यक्ति और समष्टि के हित में द्वैत उभारा है। संघर्ष घटित हुआ है। किंतु साहित्य ने उनको सामंजस्य तथा समन्वय के सूत्र में पिरोया है।"[१]

भारतीय भाषाएँ और उनका साहित्य एकदूसरे के विरोधी नहीं अपितु पूरक हैं। भारतीय भाषाएँ हमारी जातीयता की सांस्कृतिक छाप हैं, जो हमारी जातीय व सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में अत्यंत अहम भूमिका निभाती हैं। हमारी सांस्कृतिक बहुलता ने भारतीय भाषाओं को एकदूसरे की सहजीवी बनना सिखाया है।

समरसता का यह भारतीय दर्शन ही भारत और भारतीयता है। भाषाओं के वैभव में सांस्कृतिक पर्व मनाती भारतीय साहित्य की बहुमुखी व्यास दृष्टि ही व केंद्रीय धुरी है, जिससे एकबध्द होकर एक छोर से दूसरे छोर तक तमाम भेदों- मतभेदों के बावजूद

संपूर्ण भारत चिहँुकता है। घटादार वृक्षरूपी भारती साहित्य की शाखा - प्रशाखाओं से छाया और रस लेकर मनुष्य मनुष्यत्व का प्रसार करता है। जैसे "वृक्ष सर्दी - गर्मी में अपना धर्म नहीं छोड़ता, उसी प्रकार भारतीय साहित्य की सुमेरू संकल्पन सभ्यता और मूल्यों के रूप में राष्ट्र, मनुष्य और समाज में ही साकार होकर फलते-फूलते हैं। साहित्य-संस्कृति की घनी छाया में ही मनुष्य चेतना सुमेरू संकल्पों, लक्ष्यों को सहज भाव से प्राप्त करती है। समयानुकूल परिवर्तन, परिवर्धन, मूल्यों के संरक्षण में ही साहित्य का पुनः पुनः पुनर्सृजन है, लेकिन बुनियादी मूल्यों संस्कारों की रक्षा करते हुए साहित्य पुनर्सृजन की यह यात्रा मनुष्य चेतना के साथ-साथ निरंतर चलती रहती है और मनुष्य वृक्षधर्मी होने के लिए साहित्य संस्कृति के बीज मंत्रो के सहेजता रहता है।"[२]

कहना न होगा कि, भारतीय साहित्य विभिन्न प्रांतो, जातियों-उपजातियों, वर्गों भाषाओं का साहित्य है। भारतीय साहित्य भाषा को लेकर कभी विभाजित नहीं रहा है। इंद्रनाथ चौधुरी के शब्दों में कहें तो- "मगर यह भी सही है कि, भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य एक ऐसे दृष्टिकोण का निर्माण करता है। जो विविधता के प्रत्येक अवरोध को पार कर हमें भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता से परिचित कराता है। एकता-अनेकता जैसे विरूध्दों के पारस्परिक संबंधो की समस्याएँ भारतीयता के अध्ययन को आधुनिक पाठक के लिए काफी संगीन और अर्थपूर्ण बनाती है।"

विषय - वस्तु, रूप - विन्यास, सरोकार, अनुभव, प्रभाव, दिशा, आंदोलन आदि को लेकर भारतीय साहित्य में अद्‌भूत समानता रही है। भारत की मूल्यवान परंपराएँ, प्राचीन संस्कृति-सभ्यताएँ, वेदोपनिषद के संस्कार, रामायण - महाभारत की संस्कार कथाएँ आदि जीवन की प्रत्येक अच्छाईयों को जीने, देखने और प्रचारित करने को सहज ही बाध्य करती हैं। भारतीय साहित्य की अवधारणा का महत्त्व इस दृष्टि से भी है कि, यह भारतीय साहित्य ही है, जो भारतीयता की अवधारणा को निरंतर निरूपित कर रहा है। डॉ. शंभुनाथ के अनुसार "सत्ता की भूख भारतवर्ष की भारतीयता को जानने में हमेशा बाधक थी। भारत को जाना था वैदिक साहित्य की रचना करनेवालों ने पांडवों और कौरवों ने नहीं, वेदव्यास ने जाना था भारतवर्ष को। उनकी काव्यमयी आँखो में भारत विविधताओं से भरी एक विराट भू-सांस्कृतिक इकाई है, जहाँ गंगा, सिंधू, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, वितस्ता, सरयू, गोमती, कावेरी आदि नदियाँ बहती हैं। भारतवर्ष आपस में लड़ते-झगड़ते, लूट-खसोट से आंतरिक और रक्त से लथपथ देश का बिंब लेकर इतिहास में बार-बार उपस्थित हुआ हो, लेकिन ऐसे ही देश में वैदिक साहित्य, जैन-बौध्द धर्म, रामानंद, भक्ति आंदोलन और राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन जैसे आदर्श प्रतिध्रुव भी हुए।"[३]

भारतीय साहित्य वह गुलदस्ता है, जिसमें संपूर्ण भारतीय संस्कृति की महक विद्यमान है। भारतीय साहित्य ने क्षेत्रीय और भाषिक सीमाएँ लाँघकर मानवता और एकता को सुरक्षित रखा है। गांधीजी सारे संसार के लिए विश्वंद्य बन गए। इसी युग में फ्रांसीसी मीरा रीशार भारत में आकर 'द मदर' बनी और अध्यात्मक्षेत्र में ओम आनंदमयी, चौतन्यमयी परम परमे कहलाई। मदर टेरेसा को सर्वाधिक भारत ने ही आजीवन तथा मृत्यु के पश्चात् भी प्रेम दिया। अर्थात भारतीय अवधारणा के आलोक में घृणा, तिरस्कार, उपेक्षा के स्थान पर केवल प्रेम है, हृदय है, समर्पण है त्याग है और जीवनभर निरपेक्ष आचार-प्रचार व सदाचार का योग है। के सच्चिदानंद ने अपनी पुस्तक भारतीय साहित्य स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ में लिखा है कि, "भारतीय संस्कृतिक कोई एकल या अखंड संस्कृति नहीं है और न ही भारतीय साहित्य एकालाप है, उसमें अनेक स्वर, अनेक रंग और अनेक विश्वदृष्टियाँ समाहित हैं। प्रधान और उपेक्षित (सबार्ल्टन) श्रेष्ठ साहित्य और लोकप्रिय साहित्य, महान परंपरा, मार्जी और देशी, लिखित और मौखिक साहित्य का समानांतर अस्तित्त्व भारतीय परंपरा में सदियों से रहा है और परस्पर एक - दूसरे से आदान - प्रदान करता हुआ, सीखता और सीखाता है।"

इस प्रकार भारतीय साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. 'साहित्य अमृत' - अक्तुबर - २००५, संपादकीय
२. 'भारतीय लोकगीत : सांस्कृतिक अस्मिता', खंड - १,२, डॉज सुरेश गौतम
३. 'संस्कृति की उत्तर कथा' - शंभुनाथ, पृ.१०९
४. 'भारतीय साहित्य'- डॉ. शशि पंजाबी.च

❑❑❑

IMPACT FACTOR
5.395

ISSN 2394-5303

Edit By
Dr. Gholap Bapu Ganpat
Parli Vaijnath, Dist.Beed 431 515
(Maharashtra, India)
Cell : +91 75 88 05 76 95

Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

₹ 400/-

खण्ड-3

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

रचनावली

प्रमुख संपादकः
डॉ. सुरेश माहेश्वरी

खंड संपादकः
डॉ. संजय नवले
डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह अथवा आंशिक तौर पर या पुस्तक को किसी भी अंश को फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह व पुनः प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित ना किया जाए। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के अपने विचार हैं, जिनसे प्रकाशक का कोई लेना-देना नहीं हैं।

Dr. Suryanarayan Ransumbhe Rachnawali
part-3
Ed. by
Dr. Suresh Maheshwari
Compilled by
Dr. Sanjay Nawale / Dr. Pradeep Suryawanshi

I.S.B.N.: 978-81-7667-351-8 **(तीसरा खण्ड)**

I.S.B.N.: 978-81-7667-352-5 **(संपूर्ण सैट)**

© **संपादक मंडल**

मूल्य : 1100.00 रुपये (तीसरा खण्ड)

मूल्य : 4000.00 रुपये (संपूर्ण सैट)

प्रथम संस्करण : सन् **2018**

प्रकाशक : भावना प्रकाशन

109-ए, पटपड़गंज, दिल्ली-110091

दूरभाष : 22756734, 9312869947

आवरण : श्री लोकनाथ यशवंत तथा श्री दत्ता चव्हाण

शब्द संयोजक : पंकज ग्रॉफिक्स, दिल्ली-110092

मुद्रक : राधा आर्फसेट, दिलशाद गॉर्डन, दिल्ली ।

Published by : **Bhavana Prakashan**, 109-A, Patparganj, Delhi-110091, INDIA.
E-mail : bhavna_pub@rediffmail.com
website : www.bhavnaprakashan.com

अनुक्रम

(खण्ड-3)

समीक्षा : खंड-6 19वीं सदी का नवजागरण और हिंदी साहित्य : 19

उन्नीसवीं सदी का परिचय : 21
भारतीयों का अंग्रेजों से संघर्ष : 48
भारतीयों पर अंग्रेजों का प्रभाव : 76
अंग्रेजों के प्रति भारतीयों की प्रतिक्रियाएँ : 107
भारतीयों की नवजागरण विषयक धारणाएँ : 124
नवजागरण के प्रमुख अग्रदूत : 168

समीक्षा : खंड-7 20वीं सदी का नवजागरण और हिंदी साहित्य : 211

बीसवीं सदी का परिचय : 213
विश्व के बदलते संदर्भ : 251
भारत के बदलते संदर्भ : 290
भारत का स्वतंत्रता आंदोलन : 342
स्वातंत्र्योत्तर भारत में नवजागरण : 365
नवजागरण और इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ : 391

समीक्षा : खंड-8 विमर्श की अवधारणा : 417

साहित्य में नये विमर्शों का उदय : 419
विमर्शों का स्वरूप और प्रयोजन : 432
विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि : 443
मुख्यधारा और नये विमर्श : 458
विमर्शों का कलापक्ष : 479
विमर्शों की सामाजिक-सांस्कृतिक उपलब्धियाँ : 491

ऋणनिर्देश : 502

डॉ. रणसुभे का साहित्यिक परिचय : 506

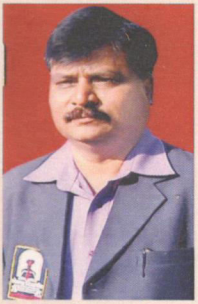

डॉ. संजय नवले

महाराष्ट्र के मराठावाड़ा अंचल में कृषक परिवार में जन्में डॉ. संजय नवले एक प्रामाणिक अध्यापक, अनुसंधानकर्ता, आलोचक, अनुवादक तथा संपादक के नाते जाने जाते है। दलित साहित्य, स्त्री-विमर्श, आधुनिक कविता, तुलनात्मक साहित्य उनके प्रिय विषय रहे हैं।

सम्मान पुरस्कार : श्रीधर पंत तिलक और डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर ग्रंथ को भारत सरकार (मानव संसाधन, नई दिल्ली) का पुरस्कार। भारतीय दलित अकादमी, दिल्ली का आम्बेडकर फेलोशिप पुरस्कार। अनोखा विश्वास, इंदौर का अखिल भारतीय प्रतिभा सम्मान। डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन अनुवाद पुरस्कार।

प्रकाशित ग्रंथ : उपन्यासकार मधुकर सिंह, मराठी दलित कहानियां, हिंदी दलित कथा, साहित्यशास्त्र, साहित्य में लोकतंत्र की आवाज़, भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा, दलित साहित्य प्रकृति और संदर्भ, शीर्षक के शोध में (अनुवाद), हिंदी दलित आत्मकथा, अगनपथ (अनुवाद), श्रीधरपंत तिलक और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, अवधान, संवेदन और अध्ययन, सृजन, रंग और रेखाएं, शोध संस्कृति, हिंदी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, दलित पैंथर (अनुवाद)।

संप्रति : प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद-431004(महाराष्ट्र)

डॉ. प्रदीप शिवराम सूर्यवंशी
ई-मेल : pradeep latur4@gmail.com
संपर्क : 8482801714

शिक्षा : एम.ए. बी.एड., एम.फिल., पी-एच.डी. (हिंदी)

प्रकाशित साहित्य : 1. व्यावहारिक हिंदी, स्वा.रा.ती.म.वि., नांदेड-पाठ्यक्रम पुस्तक 2. मध्यकालीन काव्य, यशंवतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ, नाशिक-पाठ्यक्रम पुस्तक 3. नाटककार अश्क (शोध प्रबंध)

प्रकाशित आलेख : राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं तथा संगोष्ठियों में अनेक आलेख प्रस्तुत एवं प्रकाशित।

संप्रति : सहयोगी प्राध्यापक, पदव्युत्तर हिंदी विभाग दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर (महाराष्ट्र)

978-81-7667-351-8 (तीसरा खण्ड)
978-81-7667-352-5 (संपूर्ण सैट)

भावना प्रकाशन